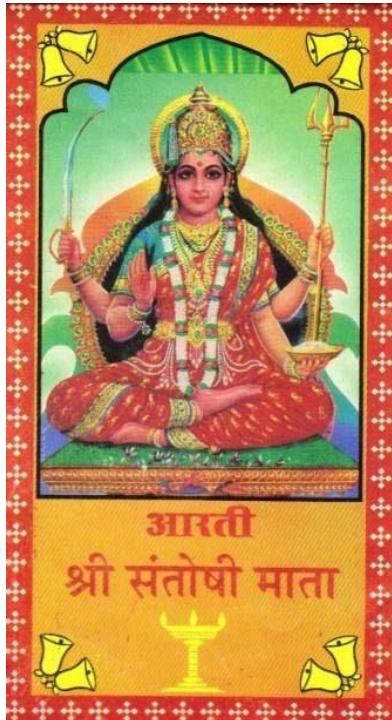


संतोषी माता की आरती (Shri Santoshi Mata Ji Ki Aarti in Hindi)



जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता ।
 अपने सेवक जन को सुख सम्पति दाता ॥
 सुन्दर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हों ।
 हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों ॥ जय ॥
 गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे ।
 मन्द हँसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ जय ॥
 स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरे प्यारे ।
 धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरें न्यारे ॥ जय ॥
 गुड़ अरु चना परमप्रिय तामें संतोष कियो ।
 संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥ जय ॥
 शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
 भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥ जय ॥
 मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
 विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ॥ जय ॥
 भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
 जो मन बसे हमार, इच्छा फल दीजै ॥ जय ॥
 दुखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किये ।
 बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये ॥ जय ॥
 ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो ।
 पूजा कथा श्रवणकर, घर आनन्द आयो ॥ जय ॥
 शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे ।
 संकट तू ही निवार, दयामयी अच्छे ॥ जय ॥
 संतोषी माँ की आरती, जो कोई नर गावे ।
 ऋद्धि-सिद्धि सुख-सम्पत्ति, जी भरके पावे ॥ जय ॥

जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता ।
 अपने सेवक जन को, सुख संपति दाता ॥
 जय सुंदर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हों ।
 हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों ॥

जय गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे ।
 मंद हँसत करुणामयी, त्रिभुवन जन मोहे ॥
 जय स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरे प्यारे ।
 धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरें न्यारे ॥

जय गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामे संतोष कियो ।
 संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥

जय शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥

जय मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ॥
जय भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसे हमारे, इच्छा फल दीजै ॥

जय दुखी, दरिद्री ,रोगी , संकटमुक्त किए ।
बहु धनधान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए ॥
जय ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनंद आयो ॥

जय शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदंबे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अंबे ॥
जय संतोषी मां की आरती, जो कोई नर गावे ।
ऋद्धिसिद्धि सुख संपत्ति, जी भरकर पावे ॥